# ए हिस्ट्री ऑफ़ फिलॉसफी
# 74 बर्ट्रेंड रसेल -- लॉजिकल एटमिज्म,
# व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

आज मैं एक हफ़्ते पहले, पिछले सोमवार को जहाँ हम थे, वहीं से बात शुरू करना चाहता हूँ, और इस संदर्भ में आपसे कहना चाहता हूँ कि आप इस हफ़्ते की अपनी रीडिंग में वह असाइनमेंट भी जोड़ लें, जो एक एक्स्ट्रा असाइनमेंट के बारे में कुछ कहता है। बस यही है। हम अगली बार, शायद उसके बाद, 20वीं सदी की शुरुआत में ब्रिटेन और अमेरिका में रियलिज़्म के बारे में बात करेंगे।

कल्बरस्टन , वॉल्यूम 8, चैप्टर 17 में पढ़ें , आप जानते हैं कल्बरस्टन की फिलॉसफी की हिस्ट्री, या एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी में, रियलिज्म पर आर्टिकल। और एक बार जब आप इसे समझ जाएंगे, तो हम वहीं वापस आएंगे जहां हम सोमवार को थे। यानी यह, वह 19वीं सदी का एंपिरिसिज्म, जिसे आपकी रीडिंग्स और मेरे कमेंट्स में फ्रेंचमैन ऑगस्टे डी कॉम्टे, ब्रिटिश जॉन स्टुअर्ट मिल, और जर्मन, या वह ऑस्ट्रियन हैं, अर्न्स्ट माच ने दिखाया है।

19वीं सदी के एंपिरिसिज़्म को इन तीन तरीकों से पहचाना जा सकता है। सबसे पहले , साइंस में हाइपोथेटिको-डिडक्टिव मेथड का डेवलपमेंट। यह वह तरीका है जिससे एंपिरिसिज़्म में एनलाइटनमेंट ऑब्जेक्टिविटी खुद को दिखाना शुरू करती है।

एनलाइटनमेंट फाउंडेशनलिज़्म के साथ समस्या, ज़ाहिर है, काफी पक्की बातें पाना था। या तो डेसकार्टेस के इंट्यूटिव फर्स्ट प्रिंसिपल्स, या जॉन लॉक, थॉमस हॉब्स और दूसरों जैसे एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन। अब, 19वीं सदी और इन लोगों की सोच में जो होता है वह यह है कि एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन, जबकि इसे इंडक्टिवली प्रूव नहीं किया जा सकता, इसे एक हाइपोथीसिस मान लिया जाता है।

और सच में, एंपिरिकल नज़रिए से, यही बात है। अगर हमारे पास क्लास के सिर्फ़ आधे हिस्से का सैंपल है, तो यह हाइपोथेटिकल है कि पूरी क्लास में वही खूबियां हैं जो उस आधे हिस्से में हैं जिसका हमारे पास सैंपल है। तो आपके पास एक हाइपोथिसिस है, फिर, एक एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन जो एक हाइपोथिसिस की तरह काम करता है।

कभी-कभी यह कोई हाइपोथीसिस भी नहीं होती, जिसकी पुष्टि उस हद तक होती है जो एंपिरिकल डेटा से मिल सकती है। कभी-कभी यह बस एक हाइपोथीसिस होती है जिसकी हमारे पास कोई सीधी पुष्टि नहीं होती। और यह सिर्फ़ इनडायरेक्टली ही पुष्टि होती है जो हम हाइपोथीसिस से निकालते हैं।

लेकिन वही पैटर्न है। जैसे एनलाइटनमेंट में यह प्रीमिज़ था, डिडक्टिव इंफरेंस से निष्कर्ष तक, फाउंडेशनलिज़्म का पूरा स्ट्रक्चर जैसा कि डेसकार्टेस ने शुरू किया था, और जैसे जॉन लॉक इसे डेमोंस्ट्रेटिव नॉलेज के साथ करना चाहते थे, फर्स्ट प्रिंसिपल्स, डेफिनिशन्स, जो भी हो, डिड्यूसिंग,

उस तरह का प्रोसीजर, अगर आप चाहें, तो प्रीमिज़ से डिडक्शन का मैथमेटिकल मेथड, जो साइंस में हाइपोथेटिकल डिडक्टिव मेथड के रूप में आगे बढ़ता है। और आप इसे देख सकते हैं, उदाहरण के लिए, जॉन स्टुअर्ट मिल में, जब वह इंडक्शन के प्रिंसिपल के बारे में बात करते हैं, जो आपको नेचर की यूनिफॉर्मिटी के मामले में जनरलाइज़ करने में मदद करता है।

प्रकृति की एकरूपता ही हाइपोथीसिस है, सबसे बड़ा, सबसे बड़ा एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन। और इसलिए आपको एक आधार के तौर पर इसकी ज़रूरत है, हाइपोथेटिकल डिडक्टिव मेथड। अब उस मेथड को कॉम्टे ने सोशियोलॉजी में, और मिल ने पॉलिटिकल साइंस और एथिक्स में बढ़ाया है।

यानी , इंसानियत, इंसानी बर्ताव, इंसानी समाज, सामाजिक बदलाव वगैरह की स्टडी में । तो आपके पास नेचुरल साइंस के तरीकों का सोशल साइंस में यह एक्सटेंशन है, जैसा कि हम उन्हें कहते हैं। और इससे वह चीज़ पैदा होती है जिसे ऑगस्ट कॉम्टे ने साइंस की यूनिटी कहा है, और 20वीं सदी में सदी को विज्ञान की एकता आंदोलन के रूप में जाना जाता है।

ट्रुलच पर कही बात पर कमेंट कर रहा था । देखिए, ट्रुलच उस यूनिटी ऑफ़ साइंस मूवमेंट का हिस्सा होंगे। वह चाहते हैं कि इतिहास को नेचुरल साइंस के तरीकों के हिसाब से बनाया जाए , जिसमें कारण और कारण की व्याख्या भी शामिल है।

नेचुरल साइंस का साइंटिफिक एंपिरिसिज़्म इतिहास को समझने में काम करे। तो यह यूनिटी ऑफ़ साइंस मूवमेंट, जॉन डेवी 20वीं सदी में उसमें बहुत असरदार थे। असल में, वैल्यूएशन की थ्योरी पर उनकी किताब, जिसमें उन्होंने अपने इंस्ट्रूमेंटलिज़्म को सबसे साफ़ तौर पर बताया है, इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ द यूनिफाइड साइंसेज़ नाम की मोनोग्राफ की एक सीरीज़ में थी।

समझे? द इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ द यूनिफाइड साइंसेज़. मोनोग्राफ की एक सीरीज़. तो ह्यूमन साइंस के खत्म होने से कॉम्टे, मिल्स, यूटिलिटेरियनिज़्म, वगैरह वगैरह पैदा हुए .

अब, आगे की बात यह है कि किसी भी तरह के एंपिरिसिज़्म को मेटाफ़िज़िक्स के साथ मुश्किल होने लगती है, जैसा कि हम अपने दोस्त डेविड हिल से अच्छी तरह जानते हैं। और इसलिए यह हैरानी की बात नहीं है कि यह 19वीं सदी का एंपिरिसिज़्म एक फेनोमेनोलॉजिकल नहीं, बल्कि एक फेनोमेनलिस्ट नज़रिया डेवलप करता है, इन दोनों को अलग रखें , एक फेनोमेनलिस्ट नज़रिया डेवलप करता है। और यह कॉम्टे में साफ़ है, जहाँ उन्होंने किसी भी साइंस के इवोल्यूशन में वे तीन स्टेज बताए हैं, पहला स्टेज धार्मिक है, दूसरा स्टेज मेटाफ़िज़िकल है, और तीसरा साइंस है।

और इसलिए एंपिरिकल साइंस ने मेटाफिजिकल अंदाज़े की ज़रूरत को खत्म कर दिया है। और इसी तरह मिल में, जहाँ मैटर को बस बताया गया है, फेनोमेनलिस्ट शब्दों में सेंसेशन की और संभावना के तौर पर डिफाइन किया गया है। और मन रिफ्लेक्शन की परमानेंट संभावना है ।

आप देखिए, पूरी तरह से एंपिरिकल डेफिनिशन, फेनोमेनलिस्ट डेफिनिशन। मन अपने आप में क्या है, या मैटर अपने आप में क्या है , इसके बारे में कुछ नहीं। तो यह कुछ फेनोमेनलिस्ट एंटी-मेटाफिजिकल चीज़ है।

और मार्क भी, वैसे ही, हालांकि वह एक फिजिसिस्ट हैं और इसलिए उनका ज़ोर इनमें से पहले दो पर ज़्यादा है । अब, हम पिछले सोमवार को इसी बारे में बात कर रहे थे। अगर आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो पिछले हफ़्ते कॉम्टे, मिल और मार्क से गार्डनर के दिए गए उन हिस्सों को ज़रूर पढ़ें।

आपको कॉम्टे और मिल को पढ़ना बहुत आसान लगेगा । मार्क को भी। लेकिन कॉम्टे और मिल दोनों में सबसे ज़रूरी हैं।

तो उनसे जान-पहचान कर लें। और मैं उन पर और समय नहीं लगाऊँगा, कुछ हद तक इसलिए क्योंकि समय बहुत कम है, लेकिन कुछ हद तक इसलिए भी क्योंकि वे बहुत आसानी से समझ में आ जाते हैं। सेमेस्टर के इस समय तक आपने खुद पढ़ना सीख लिया होगा।

आप जानते हैं, अब हमें स्टेप बाय स्टेप समझाने की ज़रूरत नहीं है, जैसा कि शायद पहले ज़रूरी था। ...बात यह है कि 19वीं सदी के एंपिरिसिज़्म की ये तीन खासियतें बर्ट्रेंड रसेल के लिए भी सच हैं। आप देखेंगे।

और बर्ट्रेंड रसेल से जो निकलता है, यानी शुरुआती विट्गेन्स्टाइन का काम, लॉजिकल पॉजिटिविज़्म, और आयर के लॉजिकल पॉजिटिविज़्म के बाद कुछ तरह की एनालिटिक फिलॉसफी। तो अब आप आयर को सोर्स मटीरियल के तौर पर पढ़ने वाले हैं। आयर को पढ़ते समय, इन तीन बातों का ध्यान रखें।

यही समझने की चाबी है कि वह क्या कर रहे हैं और पूरा पॉज़िटिविस्ट मूवमेंट क्या है। यह उस सेमिनार का सब्जेक्ट मैटर है जो B Quad में पतझड़ में होने वाला है। इसे क्या कहते हैं? हाल की एनालिटिक फिलॉसफी? कुछ ऐसा ही।

मॉडर्न एनालिटिक फिलॉसफी। हाँ, रसेल से शुरू करते हैं। और फिर, जैसा कि आप हमारे चैप्टर में स्टम्पफ, कार्नेप और क्विन में कुछ लोगों को देखते हैं।

20वीं सदी की एनालिटिक फिलॉसफी के डेवलपमेंट में तीन बड़ी बातें। खैर, विट्गेन्स्टाइन के अलावा। ठीक है? तो यह पॉजिटिविस्ट मूवमेंट को बनाने में, 50 के दशक के बीच तक साइंस की फिलॉसफी की दिशा को बनाने में, और 20वीं सदी में पश्चिम में शायद सबसे असरदार फिलॉसफी मूवमेंट, साइंटिफिक नेचुरलिज्म के डेवलपमेंट को बनाने में बहुत ज़रूरी चीज़ है।

ठीक है? नेचुरल साइंस के मेथड और फाइंडिंग्स पर आधारित एक नेचुरलिस्टिक फिलॉसफी। ये इसके पीछे की मान्यताएं हैं। बहुत ज़रूरी।

और अगर आप यह समझना चाहते हैं , तो आपको 19वीं सदी के उन लोगों को समझना होगा । आपको बर्टी रसेल वगैरह को समझना होगा । वैसे, यह जॉन स्टुअर्ट मिल से बर्ट्रेंड रसेल तक का एक बड़ा बदलाव लग सकता है, जिनकी मौत ठीक 20 साल पहले हुई थी? शायद उससे भी कम समय पहले।

जब तक आप यह नहीं पढ़ते, जैसा कि आप किसी दिन पढ़ सकते हैं, कि जॉन स्टुअर्ट मिल रसेल के गॉडफ़ादर थे। मुझे ठीक से नहीं पता कि इतने कम धार्मिक विश्वास वाले लोगों के लिए गॉडफ़ादर का क्या मतलब है, लेकिन कम से कम उस मायने में एक औपचारिक रिश्ता तो था, भले ही धार्मिक न हो। ठीक है।

तो, ऐसा मुमकिन होने के लिए उनकी ज़िंदगी कम से कम थोड़ी बहुत एक-दूसरे से मिली-जुली थी। ...मुझे लगता है, यह उनके लॉजिकल एटमिज़्म के लिए हमेशा के लिए ज़रूरी है। स्टम्पफ़ इसी बात पर ज़ोर देते हैं, और सही भी है।

अब, उन्होंने इसके अलावा और भी बहुत कुछ किया । उनकी शुरुआती दिलचस्पी मैथ और लॉजिक में थी। उन्होंने एक मैथमैटिशियन के तौर पर शुरुआत की।

जब वे दोनों कैम्ब्रिज में थे, तब व्हाइटहेड के साथ मिलकर काम किया। प्रिंसिपिया मैथेमेटिका लिखने में व्हाइटहेड के साथ मिलकर काम किया। प्यार से PM के नाम से जाने जाते हैं।

ब्रिटेन में PM का मतलब तीन अलग-अलग चीजें हैं। दोपहर, प्राइम मिनिस्टर, और प्रिंसिपिया मैथेमेटिका। ठीक है।

अब, रसेल के लिए, PM असल में कोरिया में उनके बड़े असर की शुरुआत थी। इसमें, उन्होंने और व्हाइटहेड ने दिखाया कि मैथमेटिक्स असल में लॉजिक जैसा ही है, क्योंकि वे दोनों फॉर्मल लॉजिकल सिस्टम हैं। अब, फॉर्मल लॉजिकल सिस्टम से हमारा मतलब बस एक डिडक्टिव सिस्टम है।

एक सिस्टम जो एक डिडक्टिव सिस्टम जैसा होता है। ठीक है। जैसा कि हम यूक्लिडियन ज्योमेट्री में जानते हैं।

जहाँ शुरुआती एक्सिओम से आप थ्योरम निकालते हैं, और अलग-अलग थ्योरम के नतीजों से आप आगे के थ्योरम निकालते हैं, और इसी तरह आगे भी। आइडिया यह है कि मैथ, अरिथमेटिक और ज्योमेट्री सभी को डिडक्टिव सिस्टम के तौर पर फॉर्मलाइज़ किया जा सकता है। और उन्होंने जो डेवलप किया वह सिंबॉलिज़्म था।

दूसरे सब्जेक्ट मैटर से फॉर्मल तरीके से निपटने के लिए अलजेब्रिक सिंबॉलिज्म। तो, सिंबॉलिक लॉजिक, सिंबॉलिक लॉजिक की पहली कोशिश नहीं थी। मुझे लगता है कि लाइबनिज़ शायद पहली कोशिश थी, लेकिन यही वह चीज़ थी जिसने असल में इंग्लिश बोलने वाली फिलॉसफी में सिंबॉलिक लॉजिक को लॉन्च किया। उन्होंने आप में से उन लोगों के लिए मैथमेटिकल फिलॉसफी का एक इंट्रोडक्शन भी लिखा जो मैथ में मेजर हैं और मैथ में इंटरेस्टेड हैं।

मैथ की बुनियाद। उन्होंने इस पर एक किताब तब लिखी थी जब वे पहले वर्ल्ड वॉर के दौरान एक कॉन्शियस ऑब्जेक्टर के तौर पर जेल में थे। उस समय COs के साथ यही किया जाता था।

लेकिन उनके मुख्य काम एपिस्टेमोलॉजी में थे। शुरुआत एक छोटे से पॉपुलर काम 'प्रॉब्लम्स ऑफ फिलॉसफी' से हुई जो, मुझे लगता है , 1910 में पब्लिश हुआ था। फिर बाहरी दुनिया के बारे में हमारे ज्ञान पर काम हुए।

मन और मैटर से जुड़े काम। 40 के दशक तक , 40 के दशक के आखिर तक, मुझे लगता है कि यह 47, 48 था, एपिस्टेमोलॉजी में उनका आखिरी सिस्टमैटिक काम था जिसका नाम ह्यूमन नॉलेज एट स्कोप एंड लिमिट्स था। और मैं बाद में उसका और उसके कुछ पहलुओं का ज़िक्र करूँगा ।

लेकिन एपिस्टेमोलॉजी में उनके सभी कामों में यह आदर्श दिखता है जिसे प्रिंसिपिया मैथेमेटिका में फॉर्मल सिस्टम के तौर पर डेवलप किया गया था। डिडक्टिव सिस्टम। और उनके एक छोटे से निबंध 'लॉजिक एज़ द एसेंस ऑफ़ फिलॉसफी' में।

उन्होंने इसे साफ़-साफ़ बताया है। लॉजिक, फिलॉसफी का सार है। उन्होंने इसे लॉजिकल एटमिज़्म नाम के एक लंबे निबंध में भी बताया है।

जिसने उनके मेथड और उनकी फिलॉसफी को यह नाम दिया है। अब, लॉजिकल एटमिज्म क्या है? खैर, यह थीसिस है कि हमारे सभी विचार, विश्वास, ज्ञान, किसी भी विषय पर हमारी सभी बातचीत का एटॉमिक प्रपोजल में एनालिसिस किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। चलिए इसके लिए थोड़ी जगह लेते हैं।

एटॉमिक प्रपोज़िशन में ऑर्गनाइज़ किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। अब, यह माना जाता है कि एटॉमिक प्रपोज़िशन सबसे छोटे पार्ट ऑफ़ स्पीच नहीं हैं क्योंकि एक प्रपोज़िशन में एक सब्जेक्ट और एक प्रेडिकेट होता है। इसलिए, एटॉमिक प्रपोज़िशन के अलावा, टर्म्स भी होते हैं, लेकिन ज़ाहिर है, टर्म्स का कोई मतलब नहीं होता, सिवाय इसके कि वे किसी बात को साबित करने या किसी बात को नकारने में इस्तेमाल किए जाते हैं।

यानी, प्रपोज़िशन में। तो आपके पास टर्म्स हैं, आपके पास एटॉमिक प्रपोज़िशन हैं। एटॉमिक प्रपोज़िशन को मिलाकर मॉलिक्यूलर प्रपोज़िशन बनाए जाते हैं।

इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। एटॉमिक प्रपोज़िशन बस सोच की सबसे छोटी यूनिट है। एटॉमिक प्रपोज़िशन का मतलब एटॉमिक फैक्ट्स से है।

मॉलिक्यूलर प्रपोज़िशन का मतलब मॉलिक्यूलर फैक्ट्स से है। टर्म्स का मतलब क्या है? खैर, या तो खास... नहीं, इसे वापस ले लो। टर्म्स का मतलब या तो जनरल प्रॉपर्टीज़ से है।

नीला, चौकोर... ध्यान दें कि ये जनरल, यूनिवर्सल हैं, अगर आपको पसंद है। नीला, चौकोर, भूरा। जनरल प्रॉपर्टीज़ के लिए।

या फिर वे बस लोगों के नाम बताते हैं। जो, बिल। ये शब्द हैं, सही नाम हैं।

तो या तो जनरल प्रॉपर्टीज़ या प्रॉपर नेम के तौर पर काम करते हुए, वे लोगों के नाम बताते हैं। तो फिर बात यह है कि आप बातचीत को एटॉमिक प्रपोज़िशन में एनालाइज़ करते हैं जो एटॉमिक फैक्ट्स से मेल खाते हैं। और फिर उन एटॉमिक प्रपोज़िशन को एक फॉर्मल डिडक्टिव सिस्टम में ऑर्गनाइज़ करते हैं।

सभी एटॉमिक प्रपोज़िशन कुछ खास आधारों से कैसे निकाले जा सकते हैं। कौन से आधार? एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन। जिसमें सबसे ज़्यादा जनरलिटी वाली हाइपोथीसिस शामिल हैं।

हाइपोथेटिकल डिडक्टिव मेथड। तो, किसी चीज़ के बारे में लॉजिकल एक्सप्लेनेशन देने का मतलब है कि आप यह दिखाएं कि इसे कुछ जनरलाइज़ेशन, कुछ हाइपोथीसिस, जो भी मामला हो, से लॉजिकली कैसे निकाला जा सकता है। ताकि डिडक्टिव सिस्टम का फाउंडेशनलिस्ट मॉडल नेचुरल साइंस से आगे एथिक्स तक, आप जिस भी सब्जेक्ट मैटर पर चर्चा करना चाहें, उसमें बढ़ाया जा सके।

प्रिंसिपिया मैथेमेटिका में जिस मैथ के तरीके का एनालिसिस किया गया था, उसे अब सभी साइंटिफिक सोच का तरीका माना जाता है। सभी लॉजिकल समझ का। एक्सप्लेनेशन, आधार से जनरलाइज़ेशन से डिडक्शन के तौर पर होता है।

हाइपोथेटिकल डिडक्टिव मेथड। अब, एक पल के लिए इस पर सोचें। एटॉमिक फैक्ट क्या है? खैर, हम कहते हैं, एटॉमिक फैक्ट्स असलियत के सबसे छोटे हिस्से हैं।

हाँ, यह प्रकृति का एक एटमिस्टिक नज़रिया है। प्रकृति के एक एटमिस्टिक नज़रिए के तौर पर, यह अर्न्स्ट माच से प्रभावित है। उनकी सेंसेशन की थ्योरी, आपको याद होगी।

सेंसर. अनुभव के एटॉमिक हिस्से के तौर पर सेंसेशन की थ्योरी. तो साइंटिफिक थ्योरी इन एटॉमिक डेटा, एटॉमिक फैक्ट्स के बारे में बात करने के बस सस्ते तरीके हैं.

सेंस डेटा। रसेल जो कह रहे हैं, वह यह है कि एटॉमिक फैक्ट्स के बीच संबंध अनुभव में नहीं दिए गए हैं। यह ह्यूम के समय की एक पुरानी कहानी है।

अनुभव जुड़ा हुआ नहीं आता। याद है? यह परमाणु रूप में आता है। बीप, बीप, बीप।

कोई रिश्ता नहीं दिया गया। और इसलिए, रसेल एक प्लूरलिज़्म मान रहे हैं । एक मेटाफिजिकल प्लूरलिज़्म।

यह मानते हुए कि सभी रिश्ते एक तरह के बाहरी कारण वाले रिश्ते हैं। वह अपनी शुरुआत में ही, हेगेल जैसे किसी भी एक जैसे मेटाफ़िज़िक्स को खारिज कर रहे हैं। या किसी भी ऐसे नज़रिए को कि अंदरूनी ऑर्गेनिक रिश्ते होते हैं।

वह अभी भी ऑर्गेनिज्म वाले मॉडल के बजाय मैकेनिस्टिक मॉडल पर काम कर रहे हैं। समझे? उनकी पहली किताबों में से एक का नाम मिस्टिसिज्म एंड लॉजिक था। जिसमें, अपने लॉजिकल तरीके के लिए तर्क देते हुए, उन्होंने बर्गसन और ब्रैडली जैसे लोगों के मेथडोलॉजी को नकार दिया।

इसे हेगेल ने लिखा था। आपको याद होगा, बर्गसन ने उस इंट्यूशन की बात की थी जो हमें पूरे सीन के बारे में होता है, जिससे दुनिया को देखने का नज़रिया बनता है। और ब्रैडली अपने बड़े दायरे में होने की तुरंत जानकारी की बात करते हैं।

आप समझे? जो खास बातों पर हमारे डिटेल्ड काम को स्ट्रक्चर देता है। रसेल इसे मिस्टिसिज़्म कहते हैं। इसे पूरी तरह से नकारते हैं।

क्योंकि उसे नहीं लगता कि एटॉमिक फैक्ट्स के बीच कोई अंदरूनी रिश्ते हैं। इसलिए आपके पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि आप उस तरह से पूरी चीज़ से जुड़े हैं। और इंट्यूशन का कोई आधार नहीं है।

जैसे अगर पहले से ही कोई अंदरूनी रिश्ता होता तो उसका एक आधार होता, इंट्यूशन बस वह चेतना होती जो उसके साथ चलती है। समझे ? और इसलिए, के आधार पर एक मेटाफिजिकल प्लूरलिज़्म के तौर पर, वह अपनी लॉजिकल एटमिज़्म की थ्योरी लेकर आते हैं जो उन एटॉमिक फैक्ट्स को पहचानने की कोशिश करती है जो असलियत के बेसिक हिस्से हैं।

उनके रिश्ते, अगर कोई रिश्ते हैं, तो वे कॉज़ल रिलेशनशिप हैं। और तुरंत, आपके सामने एक और प्रॉब्लम आ जाती है। क्योंकि कॉज़ल रिलेशनशिप पर सवाल किसने उठाए हैं? और गॉडफ़ादर जॉन स्टुअर्ट मिल ने।

क्या हमें उन्हें गॉडफ़ादर कहना चाहिए? आजकल इसका मतलब निकाला जा रहा है, है ना? जॉन स्टुअर्ट मिल द्वारा। सवाल। लेकिन यह देखना दिलचस्प है कि रसेल के एपिस्टेमोलॉजी के कामों में, जब वह कॉज़ल रिलेशनशिप के ज्ञान पर सवाल उठाते हैं, तो वह एक फेनोमेननिस्ट बन जाते हैं।

क्योंकि अगर आपको नहीं पता कि कॉज़ल रिलेशनशिप हैं, तो आपको कैसे पता चलेगा कि अनुभव के एटॉमिक डेटा के कोई बाहरी कारण हैं? और वे क्या हैं। तो आपके पास सिर्फ़ फ़िनॉमिना है। मेरे लिए दुनिया।

जब वह, जैसा कि वह अपने करियर के कुछ स्टेज पर करते हैं, कॉज़ल रिलेशनशिप को मानते हैं, तो वह फेनोमेनलिस्ट के बजाय रियलिस्ट बन जाते हैं। रियलिस्ट इस मायने में कि असली

मैटेरियल चीज़ें होती हैं और हम उनकी प्रॉपर्टीज़ जानते हैं। वह उन मौकों पर साइंस को रियलिस्टिक तरीके से लेते हैं।

मुझे कहना चाहिए कि अपने शुरुआती काम में, उनके पास रियलिस्ट होने का एक और कारण था, जैसा कि वे खुद थे। यानी, उन्होंने इस बात को माना कि चेतना में इंटेंशनैलिटी होती है। यह एक मेंटल काम है जो किसी चीज़ का इरादा रखता है, उसकी ओर इशारा करता है, और उसका मतलब होता है।

और जहाँ तक इरादा, यानी दिमागी काम, मुझे एक चीज़ देता है, रसेल ने एक रियलिस्ट के तौर पर शुरुआत की थी। लेकिन बाद में उन्होंने दिमागी काम को मना कर दिया। और उन्होंने वजहों के कनेक्शन के ज्ञान को भी मना कर दिया।

इसलिए, वह एक फेनोमेनलिस्ट बन गया। सवाल यह है कि क्या वह मेंटल काम एंपिरिकली जानने लायक है। क्या इसका फेनोमेनोलॉजिकल अकाउंट वैलिड है? खैर, तब एटॉमिक फैक्ट्स।

यह बात ही फिलॉसॉफिकल मान्यताओं से भरी हुई है। अब, दूसरी बात, एटॉमिक प्रपोज़िशन भाषा के हिस्से हैं। वे भाषा के हिस्से हैं।

और हमें मॉलिक्यूलर प्रपोज़िशन को ऐसे हिस्सों में एनालाइज़ करना होगा । तो, उदाहरण के लिए, देखें कि वह ऐसा कैसे करते हैं। उनका एक उदाहरण, फ्रांस का मौजूदा राजा, गंजा है।

अब, मुझे नहीं पता कि मैं हमेशा यही उदाहरण क्यों चुनता हूँ। फ्रांस का अभी का राजा गंजा है। आप इसे देखिए, यह एक सिंपल एटॉमिक फैक्ट जैसा लगता है।

नहीं, ऐसा नहीं है। यह एक मॉलिक्यूलर फैक्ट है। क्योंकि यह असल में दो चीज़ों को जोड़ता है, जैसा कि आप तब देखते हैं जब आप इसे सिंबॉलिक रूप में ट्रांसलेट करने की कोशिश करते हैं।

अब, आप में से जिन लोगों को सिंबॉलिक लॉजिक का थोड़ा इंट्रोडक्शन मिला है, वे पहचान लेंगे कि यहाँ हम एक ऐसे इंसान के बारे में बात कर रहे हैं जो अभी फ्रांस का राजा है और गंजा है। ऐसा एक x है जो x राजा है और x गंजा है। तो आपके पास, यहाँ एक एटॉमिक फैक्ट है, यहाँ एक और एटॉमिक फैक्ट है।

मॉलिक्यूलर प्रपोज़िशन इन दोनों को मिलाता है और कहता है कि यह x, जो गंजा है, वही x है जो फ्रांस का अभी का राजा भी है। यह गलत पहचान का एक हिस्सा हो सकता है। तो एनालिसिस इस तरह से आगे बढ़ता है, और सिंबॉलिक लॉजिक एक बहुत ही आसान टूल देता है।

अब, ध्यान दें कि एटॉमिक फैक्ट्स और एटॉमिक प्रपोज़िशन के अलावा, एटॉमिक प्रपोज़िशन एटॉमिक फैक्ट्स से जुड़े होते हैं। तो, यहाँ आपके पास सच की कॉरेस्पोंडेंस थ्योरी डेफ़िनिशन है। और वह इसे बहुत ध्यान से बताते हैं।

वह कहना चाहते हैं कि किसी प्रपोज़िशन के सच होने के लिए, एटॉमिक प्रपोज़िशन और एटॉमिक फैक्ट्स के बीच वन-टू-वन कोरिलेशन होना चाहिए । एटॉमिक प्रपोज़िशन के टर्म्स और एटॉमिक फैक्ट्स में प्रॉपर्टीज़ के बीच। एक बहुत ही सटीक तरह का वन-टू-वन कोरिलेशन।

अब, उस लॉजिकल एटोमिज़्म के साथ, वह बेशक, डिडक्टिव प्रोसेस को आज़माने के लिए आगे बढ़ता है। लेकिन ध्यान दें कि वह पहले ही फिलॉसफी के हिसाब से क्या कर चुका है। मेटाफ़िज़िक्स में प्लूरलिज़्म, मोनिज़्म से अलग है।

फेनोमेनलिज़्म रियलिज़्म से अलग है। खैर, वह दोनों के बीच थोड़ा झूलता रहता है और आखिर में एक रियलिस्ट के तौर पर एंजल्स की तरफ आ जाता है, लेकिन ठीक है, वह उस फेनोमेनलिज़्म में है। रियलिज़्म गेम। वह एनालिसिस के पक्ष में स्पेक्युलेटिव मेटाफ़िज़िक्स को रिजेक्ट कर रहे हैं।

लॉजिकल एनालिसिस। उनके एटॉमिक फैक्ट्स खुद न तो मेंटल हैं और न ही मैटेरियल। वे उन फर्कों के मामले में न्यूट्रल हैं ।

उसे हम न्यूट्रल मोनिस्ट कहते हैं। क्वालिटेटिव मोनिस्ट, फैक्ट का सिर्फ़ एक क्वालिटी। वह क्वालिटी मन-शरीर के फर्क के मामले में न्यूट्रल है।

यह इसलिए मुमकिन है क्योंकि मॉलिक्यूलर प्रपोज़िशन और कॉम्प्लेक्स आइडिया मेंटल कंस्ट्रक्ट हैं। हमारे कंस्ट्रक्ट। हम अपनी चीज़ें एटॉमिक फैक्ट्स से बनाते हैं।

वे हमारे पास पहले से बने हुए नहीं आते क्योंकि रिश्ते दिए नहीं जाते। हम इंद्रियों के ज़रिए कई तरह के एटॉमिक फैक्ट्स से भर जाते हैं। आप समझ रहे हैं मैं क्या कह रहा हूँ? रिश्ते दिए नहीं जाते।

हमारी सोच में जो चीज़ उभरती है , भौतिक चीज़ की वह सोच, एक मेंटल कंस्ट्रक्ट है। एक लॉजिकल कंस्ट्रक्ट। यह एक आइडियल एंटिटी है, चाहे वह बाहर से असली हो या न हो।

यह एक आइडिया के तौर पर मौजूद है। अब इसे नॉलेज की कंस्ट्रक्शन थ्योरी के नाम से जाना जाता है क्योंकि हम जो जानते हैं वह हमारे अपने मेंटल कंस्ट्रक्ट्स हैं। अब आप देखिए कि कैसे वह , एक फाउंडेशनलिस्ट होने के बावजूद, एक तरह से पोस्टमॉडर्न बन गए।

कई जगहों पर फ़र्क बताया है , और यह बात पूरी तरह से बनी हुई है। उन्होंने जान-पहचान से मिलने वाले ज्ञान और जानकारी से मिलने वाले ज्ञान के बीच फ़र्क बताया है।

अब, जान-पहचान से मिला ज्ञान, डेटा का ज्ञान है। हमारी अपनी मानसिक स्थिति का ज्ञान है। विवरण से मिला ज्ञान, भौतिक चीज़ों का ज्ञान है, जैसे फ्रांस के वर्तमान राजा का ज्ञान।

और ये मेंटल कंस्ट्रक्ट्स हैं जिन्हें हम डिस्क्राइब करते हैं। तो कंस्ट्रक्ट्स को मॉलिक्यूलर प्रपोज़िशन्स, कॉम्प्लेक्स आइडियाज़ की भाषा में डिस्क्राइब किया जाता है। ये खास प्रॉपर्टीज़ हैं ।

यहीं पर जान-पहचान से मिला ज्ञान काम करता है। यहीं पर जानकारी से मिला ज्ञान सबसे साफ़ होता है। और वह किस स्टेज पर है, रियलिस्ट है, फेनोमेनलिस्ट है, इस पर निर्भर करता है कि एटॉमिक फैक्ट्स या तो जान-पहचान से मिलेंगे या जानकारी से।

कभी एक, कभी दूसरा। ठीक है, अब इसके डिडक्टिव हिस्से के बारे में क्या? वह कैसे काम करता है? क्योंकि हमने कहा था कि वह चाहते थे कि सारी एक्सप्लेनेशन एक डिडक्टिव सिस्टम के हिसाब से हो। खैर, उदाहरण के लिए उनकी किताब ह्यूमन नॉलेज को ही ले लीजिए।

मानव ज्ञान, इसका दायरा और सीमाएं। 1948 में प्रकाशित। मानव ज्ञान, इसका दायरा और सीमाएं।

यहाँ वह साइंटिफिक नॉलेज के नेचर के स्कोप को लॉजिकल तरीके से ऑर्गनाइज़ करने की कोशिश कर रहे थे। यह दिखाने की कोशिश कर रहे थे कि हमारा सारा नॉलेज साइंटिफिक तरीकों से कैसे आता है, असल में यह हाइपोथेटिकल डिडक्टिव प्रोसीजर। उन्हें यह एहसास हुआ कि अगर वह एम्पिरिकल जनरलाइज़ेशन से डिडक्शन के ज़रिए ऐसा करना चाहते थे, जिसका हमारे पास कुछ डायरेक्ट एम्पिरिकल वेरिफिकेशन है , यानी, सैंपल जिन्हें हम वेरिफाई कर सकते हैं, तो हमारे पास डिडक्शन को पाने के लिए काफी आधार नहीं हैं।

दूसरे शब्दों में, साइंटिफिक नॉलेज में सिर्फ़ उन हाइपोथीसिस के अलावा और भी हाइपोथीसिस शामिल होनी चाहिए जिन्हें किसी भी तरह से सीधे वेरिफ़िकेशन किया जा सके। इसलिए, वह मानते हैं कि प्योर एंपिरिसिज़्म कोई लॉजिकल एक्सप्लेनेशन नहीं देता है। हमें और भी आधार बताने होंगे जिन्हें वह साइंटिफिक पोस्टुलेट्स कहते हैं।

कहने का मतलब है, मॉडर्न साइंस के सिद्धांत। ऐसे सिद्धांत जो इस काल्पनिक डिडक्टिव तरह के साइंटिफिक एक्सप्लेनेशन को काम करने लायक बनाते हैं। और वह बताते हैं कि ये क्या हैं।

इनमें से दो या तीन सबसे ज़रूरी बातें हैं इंडक्शन का सिद्धांत। प्रकृति की एकरूपता। इंडक्शन का सिद्धांत।

कारण रेखाएं। कारण प्रभाव की रेखाएं होती हैं। कारण रेखाएं।

भौतिक चीज़ों का लगभग स्थायी होना। ठीक है। दूसरे शब्दों में, उसे उन्हीं चीज़ों को सिद्धांत के तौर पर पेश करना होगा जिनके बारे में पहले के मेटाफिजिकल सिस्टम ने कहा था कि विश्वास करने के लिए मेटाफिजिकल आधार है।

तो असल में, ह्यूम ने जो विश्वास ज़िंदगी के लिए ज़रूरी बताए थे, रसेल उन्हें साइंस के लिए ज़रूरी साइंटिफिक सिद्धांतों का दर्जा देते हैं । लेकिन फिर उस आधार पर, उन्हें लगता है कि साइंटिफिक ज्ञान को सही ठहराया जा सकता है, समझाया जा सकता है, और लॉजिकल एनालिसिस काम करता है। ठीक है।

अब यह रसेल का ओवरव्यू था। सवाल? कमेंट? क्या आपने इस पर स्टम्पफ को पढ़ा है? ठीक है, कोई हैरानी नहीं कि आप सब लाइन में डक की तरह बैठे हैं। हाँ, मैरी।

हाँ, जिसे वह न्यूट्रल मोनिज़्म कहते हैं। ठीक है, डेसकार्टेस ने क्वालिटेटिव डुअलिज़्म शुरू किया। दो तरह की रियलिटी होती हैं, मन और शरीर।

ठीक है। असलियत दो तरह की होती है, मन और शरीर। डेसकार्टेस के समय से ही मन-शरीर की समस्याओं के बारे में बात करते हुए , हमने दो तरह की प्रॉपर्टीज़ के बारे में बात की है।

मेंटल प्रॉपर्टीज़ और फिजिकल प्रॉपर्टीज़। ठीक है। मेंटल प्रॉपर्टीज़, जिसमें चेतना शामिल है।

फिजिकल प्रॉपर्टीज़, जिसमें एक्सटेंशन शामिल है। खैर, रसेल जो कह रहे हैं वह यह है कि दो तरह की प्रॉपर्टीज़ नहीं होतीं। दो तरह की एंटिटीज़ नहीं होतीं।

सिर्फ़ एक तरह की प्रॉपर्टी है, जो मन-शरीर के फ़र्क के मामले में न्यूट्रल है । तो एक स्पेस-टाइम इवेंट, जो एक खास तरीके से ऑर्गनाइज़्ड है, वह बनाता है जिसे हम अपने मेंटल कंस्ट्रक्ट का नाम देते हुए, मेंटल इवेंट कहते हैं। और दूसरे तरीके से ऑर्गनाइज़्ड होने पर वह बनाता है जिसे हम अपने मेंटल कंस्ट्रक्ट का नाम देते हुए, बॉडी कहते हैं।

अब, रसेल अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जिनका यह नज़रिया है। जेम्स, विलियम जेम्स, का भी यही विचार था। और उन्होंने इसे सर्चलाइट थ्योरी ऑफ़ कॉन्शियसनेस नाम से समझाया।

कहने का मतलब है, आपको बस यह सोचना है कि कुछ ऐसा हो रहा है। मान लीजिए कि यह फिजिकल घटनाओं की एक चेन है। जो इस पॉइंट पर एक सर्चलाइट से रोशन है।

कहने का मतलब है, चेतना जागती है, आप देखिए, जब आप उस पर रोशनी डालते हैं, प्लेन को सर्चलाइट में पकड़ते हैं। तो उस मोड़ पर यह एक घटना एक फिजिकल घटना और एक मेंटल घटना दोनों है। अगर घटनाओं की इस चेन में कुछ नहीं होता, तो यह सिर्फ एक मेंटल घटना होती।

और उस मायने में, वहम, भ्रम, दिन में सपने देखना, और देखना। लेकिन जब तक यह दूसरा है, आप देखिए, यह दोनों हो सकता है। न्यूट्रल मोनिज़्म।

क्या आपको लगता है कि वह एक मेटाफिजिकल प्लूरलिस्ट हैं? दोबारा आइए? क्या आप कहते हैं कि वह एक मेटाफिजिकल प्लूरलिस्ट हैं? हाँ, आप देखिए, क्वालिटी के मामले में, चीज़ों के नेचर के मामले में, क्वालिटेटिवली, वह एक मोनिस्ट हैं। चीज़ें सिर्फ़ एक ही तरह की होती हैं। क्वांटिटी के मामले में, वह एक प्लूरलिस्ट हैं।

तरह के बहुत सारे, बहुत सारे, बहुत सारे फैक्ट्स हैं । हाँ, और मुझे लगता है कि आप यह देख सकते हैं। ल्यूक्रेटियस, डेमोक्रिटस, एटॉमिस्ट, आप देखिए, हम उन्हें प्लूरलिस्ट मानते हैं।

और एक ही तरह के लोग इस मायने में कि सब कुछ एक ही तरह का है। एनाक्सागोरस से अलग, जिनके बीज क्वालिटेटिवली अलग तरह के थे। तो एनाक्सागोरस दो तरह से प्लूरलिस्ट हैं, क्वांटिटेटिव और क्वालिटेटिव।

रसेल सिर्फ़ क्वांटिटेटिव नज़रिए से प्लूरलिस्ट हैं। क्वालिटेटिव नज़रिए से, वे एक मोनिस्ट हैं। और मुझे लगता है कि उनका मोनिज़्म असल में नेचुरलिज़्म ही है।

ठीक है, अब क्या यह 19वीं सदी के उस क्राइटेरिया को और साफ़ करता है जिसके बारे में हम बात कर रहे थे? हाइपोथेटिकल डिडक्टिव मेथड, यूनिवर्सलाइज़्ड, आप देखिए, जिससे फेनोमेनलिज़्म पैदा हुआ। हाँ, यह रसेल में है। ठीक है, हम वहीं से शुरू करेंगे।